सारथी

परम्परा और इक्कीसवी सदी!
कॉच की एक छत

कलाकारों की बस्ती में
आज़ादी की मस्ती में
जादू के रंग, कठपुतली के संग
जगलर के गोले, नटों के शोले
रागों की बहार
रिमझिम फुहार
और
हर आंगन में दस्तकारी का सामान

आओ मिलकर आज़ादी का जश्न मनायें
कलात्मक माहौल में झूमें, नाचें, गायें, पतंग उड़ायें।

14 अगस्त 1999 को
सुनहरे भविष्य की आशा लिए
कलाकारो की एक अद्भुत बस्ती में
बुनकर, दस्तकार, लोक कलाकार एवं शास्त्रीय संगीतकार
दिल्ली की कच्ची बस्तियों के निवासी
स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर
आप को सादर आमंत्रित करते है
कठपुतली कालोनी, शादीपुर डिपो, नई दिल्ली–110008

में

आईये कला का माहौल बनायें
कलाकारों का होंसला बढ़ायें

दोस्तो,

14 अगस्त 1988 को स्व0 कमला देवी चटोपाध्याय जी ने हमारे बुनकरो द्वारा बनाया गया तिरंगा हम सब बुनकर, दस्तकार, संगीतकार और लोक कलाकार की सहकारी समीतियों की नई पीढ़ी को सौंपा था । उस दिन से आज तक हम हर वर्ष एक खास विषय लेकर स्वतंत्रता दिवस मनाते आये है । आजादी शब्द जीवन का अन्तिम लक्ष्य स्पष्ट करता है यह सपनों को पूरा करने का सुझाव देता है ।

इस वर्ष का विषय है.....

परम्परा और 21वी सदी
कॉच की एक छत

हिन्दुस्तान की कच्ची बस्तियों और गली कूंचों में कला के कई रंग छुपे हैं। आज के दौर में एक अजनबी की तरह सदियों पुरानी कलायें घुट–घुट के सांस ले रही हैं। पहचान के सपने देखते फनकार गुमनामी की जिंदगी गुज़ार रहें हैं। आधुनिक समाज में पारम्परिक कलाओं के कद्रदान नही रहे और गुणवत्ता में भी कमी आयी है। रिश्ता केवल खेल खत्म पैसा हज़म वाला रह गया है। लाखों हुनरमन्द बिना काम के बेठे हैं। इसी कारण नई पीढ़ी अपनी विरासत को छोड़ना चाहती है। आज पारम्परिक कला को आधुनिक मोड देना एक चुनौती है। ढोलामारु, अमर सिंह राठौर या ऐसी ही सैकड़ों कहानियों के बदले, लोग पॉप म्यूज़िक सुनना ज्यादा पसंद करतें है। बुनकर के हस्तकरघे की जगह मशीनों ने ले ली है, हाथ के बनाये खिलौनों की जगह इलैक्ट्रोनिक गेम्स ने और संगीत घरानों की जगह सिनेमा, टेप और डिस्को ने, इसी तरह कला की कितनी ही विधायें मिटती जा रहीं हैं । दूसरी ओर आज अपने फन के पूर्ण ज्ञान के लिए नई पीढ़ी को बुजुर्ग फनकार या संग्रहालय में दबे संदर्भो से संपर्क करने का मौका नही मिलता।

पनघट पर आती जाती औरतें सिर, कमर पर भारी मटके लिये मिलकर कितने ही गीत गाती थीं। शायद जिससे उनका बोझ हल्का हो जाये, रोज़ाना जिंदगी के सुख–दुःख बंट जायें। अब घर में एक टोंटी लग गयी है। अच्छा है। कड़ी मेहनत खत्म हो गई। पहले घड़ों का डिज़ाइन जो कमर व सिर पर ढोने के लिए बना, बेशक अब बदलेगा। आज पनघट, गीत, घड़े सब इतिहास के पन्नों पर है। यह बात का नहीं कि गीत खत्म हो गये, पनघट नही रहे, सोचना यह है कि इन्सानों के अन्दर की प्रेम व आपसी मिलन की भावना अब क्या नया रुप ले रही है। समुदायिक संगीत एक कमरे में सिमट कर रह गया है । टी.वी. देखते समय लोग आपस मे बात तक नहीं करते। संगीत का दिल हुआ, तो खुद नही गुनगुनाया, कैसट लगा दी, रेडियो चला दिया। जीवित कला हमारे मेल–जोल का एक बहाना व प्रतीक भी है। आज मौहल्लों का नया नमूना ऐसा है कि आस–पड़ोस और एक दूसरे से सहज मिलना कठिन होता जा रहा है। तरक्की से अगर हमने कुछ पाया है तो खोया भी बहुत कुछ है। जो जा रहा है उसकी जगह क्या मिल रहा है ? क्या बचायें, कैसे बचायें, किसके लिए बचायें ? विकास की गति का आकलन जरूरी है ।

जब समाज और सांस्कृतिक नीति पर उँगली उठाई जा सकती है तो तीन उँगलियां हम कलाकारों की ओर भी उठती है। सारथी का सदस्य कला की रक्षा के लिए क्या सब कुछ कर रहा है? कलाकार के व्यवहार में कला के प्रति शायद एक रूखापन आ गया है। इस बेरुखी की वजह जो भी हो, खत्म तो संस्कृति ही हो रही है। अब अपनी कला के रंगो को देख कर उसके दिल में हलचल नहीं होती, उसके हाथ–पैर पहले की तरह अपने आप नहीं थिरकते। बच्चे उसके सामान से नहीं क्रिकेट खेलना ज्यादा पसंद करते हैं। उनका यह सोचना है कि पारम्परिक कला भविष्य की प्रतीक नही बन सकती। वर्तमान को भी अपनाने की इच्छा ऊँची पहुँच से जुड़ी है।

•

पटरी पर बैठकर जूते बनाने वाले एम. एम. राजू ने विश्वविख्यात अमेरिकन डिजाईनर, बर्नाड रोडास्की के साथ, सिकन्दरा के पत्थर तराशने वाले केसरीराम ने इटली के वस्तुकार मारियो बिलीनी और उदयपुर के गोपी लाल लुहार ने जर्मनी के इंजीनियर फ्राइऑटो के साथ पारम्परिक हुनर को जोड़ कर विश्व प्रसिद्ध नमूने तैयार किये। इसी तरह अहमदाबाद की कशीदाकारी और पैचवर्क से जुड़ी तेजी बेन नये प्रयोगों के बल पर आज दर्जनों लोगों को रोज़गार दे रही है। इसके पीछे उनकी मेहनत है, लगन है, सपने हैं।

इक्कीसवी सदी आसमान की तरह कलाकार को दिखाई दे रही है; पर इसके बीच कॉच की एक छत है। जानना यह है कि हुनर के जरिये एक सृजनात्मक इंसान इस भ्रम को कैसे तोड़ सकता है?

सवाल सिर्फ बदलने का नही है। आधुनिकता का रास्ता पश्चिमीकरण नही है। आज ऐसे माहौल की जरुरत है जिसमें कला के नवीन एवं काल्पनिक रुप का पुर्नजन्म हो। हवाओं में इसकी खुशबू है लेकिन बदलाव लाने के लिए कलाकार को खुद ही बहुत कुछ करना पड़ेगा। अपनी कला को समाज की मॉग के अनुरुप इस तरह ढालना होगा की वह एक छाया या नकल बनकर न रह जाये। शुभा मुदगल, मीया कृष्णाराव, जाकिर हुसैन और नुसरत फतेहअली खान इसके अच्छे उदाहरण है।

कलाकार को आज अपने पुराने हुनर के साथ–साथ नयी तकनीक व बाज़ार के नये नुस्खे भी सीखने होगें। बुनकर और दस्तकार को अगर आज नये डिजाइनों और नई टैकनोलोजी की जरुरत है तो लोक कलाकारो को सहज ज्ञान के अलावा कुछ और भी करना होगा।

कलाकार को अगर आगे बढना है तो "दादा ने घी खाया मेरा हाथ सूंघो" वाली बात छोड़नी पड़ेगी। कलाकार के घर पैदा होने से कोई कलाकार नहीं बन जाता । बाप दादा के नाम पर खाने से अपनी पहचान नही बनती।

राजीव सेठी

मसेत चॉद बाबा और चर्मकार एम. एम. राजू की अनोखी भेंट ।

कठपुतली कालोनी के युवकों द्वारा पुतली पर बने एक स्टेज नाटक कारवॉ का दृश्य ।

शिल्पायन केन्द्र में पेपर मेशे शिल्प सीख रही लोक कलाकार बालिकायें ।

निमंत्रण

आप आमंत्रित हैं एक बस्ती जो कि पारम्परिक कला का रहवास है। एक ऐसा समारोह मनाने के लिए जिसमें स्वतन्त्रता दिवस के साथ कला की उमंग भी है आप पायेंगे कि स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर यह किस तरह से कला के मेले के रुप में बदल जाती है। स्टेज शो के अलावा इसका हर घर कला का एक नमूना होता है। यहां जादू की मंत्र मुग्ध विधाओं पर जमूरे के डायलौग, इशारों पर नाचती कठपुतली, साथ ही दूसरी तरफ नाच, गाना, पतंग के अलावा दस्तकारी की दुकान होगी। और देखेंगे कि परेशानियों से जूझते रहने के बावजूद यहाँ के लोग किस उत्साह और साहस से सदियों पुरानी सांस्कृतिक धरोहर को अपने में समेटे हुए है

कार्यक्रम :

14 अगस्त 1999

09:30 बजे प्रातः—————— झंडा रोहण, राष्ट्रगान
09:35 बजे प्रातः—————— अतिथि भाषण
09:45 बजे प्रातः—————— सांस्कृतिक कार्यक्रम
10:45 बजे प्रातः—————— बस्ती में सामुदायिक कार्यक्रम ।

कार्यक्रम स्थल –: भूले बिसरे कलाकार वर्कशॉप, कठपुतली कालोनी, शादीपुर डिपो, नई दिल्ली–110008

शुभकामनायें

विनीत

राजीव सेठी

(राजीव सेठी)

सारथी–फलेट 4, शंकर मार्किट नई दिल्ली –110001
फोन ; 3315107,3323744 फेक्स; 3314065 ई–मेल;sarthi@nda.vsnl.net.in